8 महादेवी वर्मा

आधुनिक मीरा के नाम से प्रसिद्ध महादेवी वर्मा का जन्म सन् 1907 ई० में होली के दिन फर्रुखाबाद (उ० प्र०) में हुआ था। इनके पिता श्री गोविन्द सहाय इन्दौर के एक कॉलेज में अध्यापक थे तथा माता सरल हृदया, धर्म-परायणा महिला थीं। महादेवी बड़ी कुशाग्रबुद्धि बालिका थीं और बचपन से ही माँ से रामायण-महाभारत की कथाएँ सुनते रहने के कारण इनके मन में साहित्य के प्रति आकर्षण उत्पन्न हो गया था। फलतः मौलिक काव्य-रचना इन्होंने बहुत छोटी आयु से आरम्भ कर दी थी। इन्होंने प्रयाग विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम० ए० किया। नौ वर्ष की छोटी उम्र में ही इनका विवाह हो गया था, किन्तु इन्हीं दिनों इनकी माता का स्वर्गवास हो गया। इनके पति डॉक्टर थे, परन्तु दाम्पत्य जीवन में इनकी रुचि नहीं थी। इनके जीवन पर महात्मा गाँधी का और कला-साहित्य साधना पर कवीन्द्र-रवीन्द्र का प्रभाव पड़ा। इन्होंने नारी स्वातन्त्र्य के लिए संघर्ष किया, परन्तु अपने अधिकारों की रक्षा के लिये नारियों का शिक्षित होना आवश्यक बताया। कुछ वर्षों तक महादेवी जी उत्तर प्रदेश विधान परिषद् की मनोनीत सदस्या रहीं। दर्शन, संगीत तथा चित्रकला में इनकी विशेष अभिरुचि थी। भारत-सरकार ने इन्हें 'पद्मभूषण' अलंकार से सम्मानित किया। ये प्रयाग महिला विद्यापीठ की उपकुलपति पद पर भी आसीन रहीं। इनका देहावसान सन् 1987 ई० में प्रयाग में हुआ।

कवि : एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म**–सन् 1907 ई०।
- **जन्म-स्थान**–फर्रुखाबाद (उ०प्र०)।
- **पिता**–श्री गोविन्द सहाय।
- **माता**–श्रीमती हेमरानी।
- उ० प्र० विधान परिषद् की सदस्या रहीं।
- **भाषा :** संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली।
- **शैली :** मुक्तक गीति काव्य की प्रवाहमयी सुव्यवस्थित शैली।
- **प्रमुख रचनाएँ**—यामा, दीपशिखा, नीरजा, नीहार, रश्मि, सान्ध्य गीत।
- **मृत्यु**–सन् 1987 ई०।

महादेवी जी आधुनिक हिन्दी साहित्य के निर्माताओं में महत्त्वपूर्ण स्थान की अधिकारिणी हैं। प्रसाद, पन्त, निराला तथा महादेवी वर्मा—'छायावाद-युग' के इन चार महान् कवियों को बृहत् चतुष्टयी के नाम से जाना जाता है। महादेवी जी ने मैट्रिक उत्तीर्ण करने के पश्चात् ही काव्य-रचना प्रारम्भ कर दी थी। करुणा एवं भावुकता इनके व्यक्तित्व के अभिन्न अंग थे। जहाँ एक ओर इनके काव्य में इन भावनाओं की अभिव्यक्ति हुई, वहीं दूसरी ओर इनकी ये भावनाएँ सम्पर्क में आनेवाली पीड़ित एवं दुःखी व्यक्तियों को भी प्रेम एवं सहानुभूति से प्रभावित करती रहीं। इनके द्वारा रचित काव्य में रहस्यवाद, वेदना एवं सूक्ष्म अनुभूतियों के कोमल तथा मर्मस्पर्शी भाव मुखरित हुए हैं। इनकी रचनाएँ सर्वप्रथम 'चाँद' पत्रिका में प्रकाशित हुईं। इनकी काव्यात्मक प्रतिभा के लिए 'सेकसरिया' एवं 'मंगलाप्रसाद' पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। इन्हें 'ज्ञानपीठ एवं 'भारत-भारती' पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया था।

इनकी प्रमुख काव्य-रचनाएँ हैं—**नीहार, रश्मि, नीरजा, सान्ध्यगीत, दीपशिखा, सप्तपर्णा**, **यामा** तथा **हिमालय।** नीहार महादेवी का प्रथम काव्य-संग्रह है। इसमें 47 गीत संकलित हैं। साहित्य को इनकी देन मुख्यतया एक कवि के रूप में है, किन्तु इन्होंने प्रौढ़ गद्य-लेखन द्वारा हिन्दी भाषा को सजाने-सँवारने तथा अर्थ-गाम्भीर्य प्रदान करने में जो योगदान किया है, वह भी प्रशंसनीय है।

संयोगकालीन क्षणों की मादक स्मृति जैसे इन्हें विभोर किये रहती है, वियोगकालीन अवसाद और निराशा में भी ये जीवन की सार्थकता ही नहीं अपितु रस अनुभव करती हैं। विराट और रहस्यमयी प्रकृति का कण-कण कभी तो इन्हें प्रियतम का परिचय देनेवाला लगता है, कभी उसका दूत बनकर सन्देश लाता है, कभी उनकी सुप्त, मधुर और पीड़ामयी स्मृतियों को जगा देता है। महादेवी जी का काव्य-क्षेत्र सम्भवतः छायावादी कवियों में सर्वाधिक सीमित तो है लेकिन सबसे अधिक गहराई भी उसी में है। प्रणयी मानस को भाव-विभोर करनेवाली जिन अनुभूतियों को कवयित्री ने गीतों में ढाला है, वे अभूतपूर्व हैं। हृदय को मथ देनेवाली जितनी हृदय-विदारक पीड़ाएँ कवयित्री द्वारा चित्रित की गयी हैं, वे अद्वितीय ही मानी जायँगी।

सूक्ष्म संवेदनशीलता, परिष्कृत सौन्दर्य रुचि, समृद्ध कल्पना शक्ति और अभूतपूर्व चित्रात्मकता के माध्यम से प्रणयी मन की जो स्वर-लहरियाँ गीतों में व्यक्त हुई हैं, आधुनिक क्या सम्पूर्ण हिन्दी काव्य में उनकी तुलना शायद ही किसी से की जा सके। शिक्षित और सुसंस्कृत पाठक के मर्म को छू लेने की जितनी सामर्थ्य महादेवी वर्मा के गीतों में है, उतनी शायद ही किसी छायावादी कवि के गीतों में हो।

खड़ीबोली की कर्कशता को, छायावादी कवियों के कुसुमकोमल, भावुक और कल्पनाशील व्यक्तित्व ने समाप्त कर उसे ब्रजभाषा जैसे माधुर्य से सम्पन्न किया था। कवयित्री ने अपने व्यक्तित्व की सहज करुणा, संवेदनशीलता और संगीतबोध के द्वारा उसमें अभूतपूर्व माधुर्य तथा मानव और प्रकृति जगत् के सूक्ष्म-से-सूक्ष्म स्पन्दनों को अभिव्यक्त करने की क्षमता भर दी। तत्सम शब्दावली गीतों को एक गरिमा से अभिभूत कर देती है। कलापूर्ण चित्रात्मकता इनके गीत शिल्प का एक प्रमुख अंग है। अलंकार और लक्षणा तथा व्यंजना का चमत्कार इनके काव्य में प्राप्त होता है। प्रणयी जीवन के हास-अश्रु की अभिव्यक्ति इनके काव्य की सीमा-रेखा मानी जा सकती है। सामयिक जीवन की प्रतिछवि का नितान्त अभाव वास्तव में बड़ी खटकनेवाली चीज है। कठिनता से ही दो-तीन गीतों में बाह्य जगत् की छाया दिखायी पड़ती है। आश्चर्य होता है यह देखकर कि कवयित्री की गद्य रचनाओं तथा सामाजिक जीवन में जो समृद्ध चेतना पर्याप्त मात्रा में मिलती है, उसकी कोई छाया-रेखा भी गीतों में खोजे नहीं मिलती। व्यक्तित्व का ऐसा कठोर विभाजन अभूतपूर्व ही है। फिर भी हिन्दी गीतों की मधुरतम कवयित्री के रूप में महादेवी वर्मा अद्वितीय गौरव से मण्डित हैं।

गीत

(1)

चिर सजग आँखें उनींदी आज कैसा व्यस्त बाना!
जाग तुझको दूर जाना!

अचल हिमगिरि के हृदय में आज चाहे कम्प हो ले,
या प्रलय के आँसुओं में मौन अलसित व्योम रो ले;
आज पी आलोक को डोले तिमिर की घोर छाया,
जाग या विद्युत-शिखाओं में निठुर तूफान बोले!
पर तुझे है नाश-पथ पर चिह्न अपने छोड़ आना!
जाग तुझको दूर जाना!

बाँध लेंगे क्या तुझे यह मोम के बन्धन सजीले?
पन्थ की बाधा बनेंगे तितलियों के पर रँगीले?
विश्व का क्रन्दन भुला देगी मधुप की मधुर गुनगुन,
क्या डुबा देंगे तुझे यह फूल के दल ओस-गीले?
तू न अपनी छाँह को अपने लिए कारा बनाना!
जाग तुझको दूर जाना!

वज्र का उर एक छोटे अश्रुकण में धो गलाया,
दे किसे जीवन-सुधा दो घूँट मदिरा माँग लाया?
सो गई आँधी मलय की बात का उपधान ले क्या?
विश्व का अभिशाप क्या चिर नींद बनकर पास आया?
अमरता-सुत चाहता क्यों मृत्यु को उर में बसाना?
जाग तुझको दूर जाना!

कह न ठंडी साँस में अब भूल वह जलती कहानी,
आग हो उर में तभी दृग में सजेगा आज पानी,
हार भी तेरी बनेगी मानिनी जय की पताका,
राख क्षणिक पतंग की है अमर दीपक की निशानी!
है तुझे अंगार-शय्या पर मृदुल कलियाँ बिछाना!
जाग तुझको दूर जाना!

('सान्ध्यगीत' से)

(2)

पंथ होने दो अपरिचित प्राण रहने दो अकेला!

घेर ले छाया अमा बन,
आज कज्जल-अश्रुओं में रिमझिमा ले यह घिरा घन;
और होंगे नयन सूखे,
तिल बुझे औ' पलक रूखे,
आर्द्र चितवन में यहाँ
शत विद्युतों में दीप खेला!
अन्य होंगे चरण हारे,
और हैं जो लौटते, दे शूल को संकल्प सारे;

दुखव्रती निर्माण उन्मद
यह अमरता नापते पद,
बाँध देंगे अंक-संसृति
से तिमिर में स्वर्ण बेला!

दूसरी होगी कहानी,
शून्य में जिसके मिटे स्वर, धूलि में खोयी निशानी,
आज जिस पर प्रलय विस्मित,
मैं लगाती चल रही नित,
मोतियों की हाट औ'
चिनगारियों का एक मेला!

हास का मधु दूत भेजो,
रोष की भ्रू-भंगिमा पतझार को चाहे सहेजो!
ले मिलेगा उर अचंचल,
वेदना-जल, स्वप्न-शतदल,
जान लो वह मिलन एकाकी
विरह में है दुकेला!
पंथ होने दो अपरिचित प्राण रहने दो अकेला! **('दीपशिखा' से)**

(3)

मैं नीरभरी दुख की बदली!
स्पन्दन में चिर निस्पन्द बसा,
क्रन्दन में आहत विश्व हँसा,
नयनों में दीपक से जलते
पलकों में निर्झरिणी मचली!
मेरा पग पग संगीतभरा,
श्वासों से स्वप्न-पराग झरा,
नभ के नव रंग बुनते दुकूल
छाया में मलय-बयार पली;
मैं क्षितिज-भृकुटि पर चिर धूमिल,
चिन्ता का भार बनी अविरल,
रज-कण पर जल-कण हो बरसी
नव जीवन-अंकुर बन निकली!
पथ को न मलिन करता आना
पद-चिह्न न दे जाता जाना,
सुधि मेरे आगम की जग में
सुख की सिहरन हो अन्त खिली!
विस्तृत नभ का कोई कोना,
मेरा न कभी अपना होना,
परिचय इतना इतिहास यही
उमड़ी कल थी मिट आज चली! **('सान्ध्यगीत' से)**

अभ्यास प्रश्न

पद्यांश पर आधारित प्रश्न

1. पद्यांशों पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(गीत)

(क) चिर सजग आँखें उनींदी आज कैसा व्यस्त बाना!
जाग तुझको दूर जाना!
अचल हिमगिरि के हृदय में आज चाहे कम्प हो ले,
या प्रलय के आँसुओं में मौन अलसित व्योम रो ले;
आज पी आलोक को डोले तिमिर की घोर छाया,
जाग या विद्युत-शिखाओं में निठुर तूफान बोले!
पर तुझे है नाश-पथ पर चिह्न अपने छोड़ आना!
जाग तुझको दूर जाना!

प्रश्न– (i) प्रस्तुत पद्यांश की कवयित्री एवं कविता का नाम लिखिए।
(ii) प्रस्तुत पद्यांश के माध्यम से कवयित्री ने पथिक को क्या प्रेरणा दी है?
(iii) प्रस्तुत पंक्तियों में किसका उल्लेख किया गया है?
(iv) 'अचल हिमगिरि के हृदय में आज चाहे कम्प हो ले' इस पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?
(v) रेखांकित पंक्ति की व्याख्या कीजिए।

(ख) कह न ठंडी साँस में अब भूल वह जलती कहानी,
आग हो उर में तभी दृग में सजेगा आज पानी,
हार भी तेरी बनेगी मानिनी जय की पताका,
राख क्षणिक पतंग की है अमर दीपक की निशानी!
है तुझे अंगार-शय्या पर मृदुल कलियाँ बिछाना!
जाग तुझको दूर जाना!

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) प्रस्तुत काव्य-पंक्तियों से कवयित्री का क्या आशय है?
(iii) मनुष्य को अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ने के लिए क्या करना चाहिए?
(iv) प्रस्तुत पंक्तियों में कवयित्री ने किसका आह्वान किया है?
(v) रेखांकित पंक्ति की व्याख्या कीजिए।

(ग) पंथ होने दो अपरिचित प्राण रहने दो अकेला!
घेर ले छाया अमा बन,
आज कज्जल-अश्रुओं में रिमझिमा ले यह घिरा घन;
और होंगे नयन सूखे,
तिल बुझे औ' पलक रूखे,
आर्द्र चितवन में यहाँ
शत विद्युतों में दीप खेला!

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) कवयित्री को साधना पथ पर बढ़ने से कौन नहीं रोक सकता?
(iii) प्रस्तुत पद्यांश में लेखिका किस पथ पर आगे बढ़ने का आह्वान करती है?

(iv) इस पद्यांश में कवयित्री की किस भावना को व्यक्त किया गया है?
(v) रेखांकित पंक्ति की व्याख्या कीजिए।

(घ) मैं नीरभरी दुख की बदली!
स्पन्दन में चिर निस्पन्द बसा,
क्रन्दन में आहत विश्व हँसा,
नयनों में दीपक से जलते
पलकों में निर्झरिणी मचली!

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) कवयित्री के निरन्तर रुदन का क्या कारण है?
(iii) प्रस्तुत पंक्तियों में कवयित्री ने स्वयं को क्या बताया है?
(iv) 'नयनों में दीपक से जलते' इस पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?
(v) रेखांकित पंक्ति की व्याख्या कीजिए।

(ङ) विस्तृत नभ का कोई कोना
मेरा न कभी अपना होना,
परिचय इतना इतिहास यही
उमड़ी कल थी मिट आज चली!

प्रश्न– (i) पद्यांश की कवयित्री एवं पाठ का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) प्रस्तुत पद्यांश में अलंकार योजना पर प्रकाश डालिए।
(iv) कवयित्री अपने जीवन की तुलना किससे व क्यों करती है?
(v) काव्य-पंक्तियों के अन्त में कवयित्री अपना परिचय किस रूप में प्रस्तुत कर रही है?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. निम्नांकित काव्य-सूक्तियों की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए—
(क) चिर सजग आँखें उनींदी आज कैसा व्यस्त बाना! जाग तुझको दूर जाना।
(ख) हार की तेरी बनेगी मानिनी जय की पताका।
(ग) पंथ होने दो अपरिचित, प्राण रहने दो अकेला।
(घ) मैं नीर भरी दुख की बदली।
(ङ) जान लो वह मिलन एकाकी, विरह में है दुकेला।
(च) है तुझे अंगार-शय्या पर मृदुल कलियाँ बिछाना।

2. महादेवी वर्मा का जीवन-परिचय निम्नांकित बिन्दुओं के आधार पर लिखिए—
(i) जन्म-स्थान, काल-समय, जन्मदाता, शिक्षा-दीक्षा।
(ii) कवयित्री के समय की साहित्यिक, राजनीतिक एवं सामाजिक परिस्थितियाँ।

अथवा

महादेवी वर्मा का जीवन-परिचय संक्षेप में दीजिए।

3. महादेवी वर्मा की काव्यगत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

4. महादेवी वर्मा का जीवन-परिचय दीजिए तथा उनके साहित्यिक योगदान पर प्रकाश डालिए।

5. महादेवी वर्मा का जीवन-परिचय देते हुए उनकी कृतियों पर प्रकाश डालिए। **[2020 ZD]**

अथवा

महादेवी वर्मा का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी कृतियों का उल्लेख कीजिए। **[2020 ZI, ZK, ZM]**

6. महादेवी वर्मा का जीवन-परिचय देते हुए उनकी कृतियों तथा साहित्यिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

अथवा

महादेवी वर्मा का जीवन-परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए। **[2016 SB, 19 CL, CM, CO]**

7. सिद्ध कीजिए कि महादेवी वर्मा आधुनिक युग की मीरा हैं।
8. संकलित काव्य के आधार पर महादेवी वर्मा की रहस्यवादी विचारधारा स्पष्ट कीजिए।
9. "महादेवी जी ने लौकिक विरह को नहीं आध्यात्मिक विरह-वेदना को वाणी दी है।" इस कथन की युक्ति-युक्त समीक्षा कीजिए।

अथवा

महादेवी वर्मा को आधुनिक मीरा क्यों कहा जाता है? स्वपठित रचनाओं के आधार पर सतर्क उत्तर दीजिए।

10. "महादेवी जी की चित्र विधायिनी कल्पना का परिचय उनके काव्य-बिम्बों में भली प्रकार मिलता है।" स्वपठित गीतों के आधार पर इस कथन की पुष्टि कीजिए।
11. गीति-काव्य किसे कहते हैं? महादेवी जी की रचनाओं में गीति-काव्य के लक्षण कहाँ तक चरितार्थ हुए हैं?
12. "महादेवी वेदना की कवयित्री हैं।" इस उक्ति की सोदाहरण समीक्षा कीजिए।
13. महादेवी वर्मा का जीवन परिचय देते हुए उनकी रचनाओं और भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए। **[2020 ZF]**

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. महादेवी वर्मा की रचनाओं का उल्लेख कीजिए।
2. महादेवी वर्मा के काव्य में प्रकृति-चित्रण की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।
3. 'चिर सजग आँखें उनींदी' के माध्यम से महादेवी जी ने क्या सन्देश दिया है?
4. 'मैं नीर भरी दुःख की बदली' का भावार्थ लिखिए।
5. महादेवी के व्यक्तित्व के विषय में लिखिए।
6. 'सजल है कितना सवेरा' कविता में व्यक्त महादेवी वर्मा के भावों को स्पष्ट कीजिए।
7. "महादेवी के गीत आँसुओं से गीले हैं।" इस कथन की सार्थकता पर विचार कीजिए।
8. "महादेवी का काव्य विरह का काव्य है।" प्रमाणित कीजिए।

काव्य-सौन्दर्यात्मक प्रश्न

1. निम्नलिखित काव्य-पंक्तियों में काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए—

   (क) जान लो वह मिलन एकाकी, विरह में हैं दुकेला।

   (ख) परिचय इतना इतिहास यही।
   उमड़ी कल थी मिट आज चली।।
2. शृंगार रस का लक्षण बताते हुए संकलित 'गीत' शीर्षक से उदाहरण लिखिए।